आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

<u>Date</u>: 29 March 2022 **Website:** www.shivbabas.org

धारणा – *" आज से इतना पुरुषार्थ करे कि सफलता आपके परछाई बन जायें "*

सफल व्यक्ति इस संसार में अपने को बहुत ही **भाग्यवान** मेहसूस करता है। जब मनुष्य को हर कर्म में और हर कदम में **सफलता** मिलती है, तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता है।

ऐसा कौन मनुष्य होगा जो सफलता का माला अपने गले में डलवाना न चाहता हो। परन्तु **सफलता के बहुत सारे आधार है।**

किसी भी फ़ील्ड में सफल होने के लिए, चाहे बीमारियां ठीक करने में सफलता मिले, **नौकरियों** में प्रोमोशन में सफलता मिले, **बिज़नेस** में सफलता मिले, **विद्यार्थियों** को पढ़ाई में सफलता मिले, **सम्बन्धों** में सफलता रहे।

जो भी फ़ील्ड है उसमें सफलता का आधार है, **एक बल एक भरोसे में जीना।** केवल सर्वशक्तिमान पर विश्वास रखना, कि वो हमारे साथ है तो हमारी सफलता निश्चित है।

क्योंकि जितना हमें **निश्चय** रहता है उतनी ही सफलता **निश्चित** होती है। जो निश्चिंत है, उनकी सफलता भी निश्चित है। और निश्चिंत रहने का आधार **निश्चय** है।

स्वयं में निश्चय, बाबा में निश्चय, अपने भविष्य में निश्चय, अपनी सफलता में निश्चय। हम सभी ध्यान दे कि कहीं हमें स्वयं में ही संशय तो नहीं रहता, हम सफल होंगे या नहीं होंगे?

एक स्टूडेंट मेडिकल का एक्साम देकर आई है। उसे बार-बार संशय हो रहा है, मुझे सफलता मिलेगी या नहीं मिलेगी। और वो बहुत परेशान है।

उसने अपने अन्तर्मन में शायद यह भर लिया है कि मुझे सफलता नहीं मिलेगी। लेकिन अगर वो अपने अन्तर्मन में यह निश्चय कर ले, सफलता मेरी ही होगी, तो सफलता जरूर होगी।

तो अपने निश्चयता के पारसेन्टेज को बढ़ाते चले। और तीसरी बात है ... सफलता का आधार है दुआयें। हमें महान आत्माओं की भी दुआयें प्राप्त करनी है, और हमें तो दुआयें दे रहे है स्वयं भगवान।

विचार करे, अगर अपने **परमपिता की दुआयें लेनी है** तो क्या करना होगा? उसकी दिल को जितना होगा। उसके **आज्ञाकारी** बनना होगा। अच्छे योगी बनना होगा।

अगर वे कहते है ... " **अपनी समस्यायें मुझे अर्पित करके तुम बेफिक्र बादशाह बन जाओ** " ... तो हमें ऐसा करना होगा। यदि वे कहते है ... " तुम पवित्र बन जाओ, परचिन्तन से मुक्त हो जाओ, तुम व्यर्थ को विदाई दे दो " ... तो हमें ऐसा करना होगा।

तब हमें बाबा की दुआयें मिलती रहेंगी। और महान आत्माओं की दुआयें .... हम उन्हें सुख देते रहेंगे। हम उन्हें एप्रिसियेट करेंगे। हम उनके कार्य में सहयोगी बनेंगे। हम यज्ञ की सेवाओं में उनको मदद करेंगे।

तो महान आत्माओं की दुआयें भी मेरे साथ रहेंगी। और यही दुआयें हमें सफलता की ओर ले चलती है। **कठिन कार्य को सरल कर देती है।** असम्भव कार्य को सम्भव बना देती है।

तो हम लक्ष्य रख ले, हम किसी को बददुआयें नहीं देनी है। कोई हमें बददुआयें दे भी तो हमें उन्हें दस दुआयें देनी है। इसी तरह हम अपने मन को भी खुशियों से भरपूर रखेंगे। और दुआओं के खजानों से भी भरपूर। तो हमें सफल होने में कोई भी नहीं रोक सकता।

जिसके कर्म अच्छे नहीं होते, जिनका मन अच्छा नहीं होता, उनको सफलता मेहनत के बाद भी नहीं मिलती है।

तो आज सारा दिन हम इस स्वमान में रहेंगे ...

" मैं सफलता मूर्त आत्मा हूँ .. मुझे बाबा का वरदान है .. बापदादा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है .. वो कह रहे .. बच्चे सफलता मूर्त भव "

कोई भी कार्य करने से पहले इसको स्मृति में रखकर ही कार्य की ओर चलेंगे। और साथ-साथ हम ऊपर की और देखेंगे और बापदादा का आह्वान करेंगे।

हर घन्टे एकबार अवश्य बाबा का आह्वान करेंगे। उनसे दृष्टि लेंगे। उनका वरदानी हाथ अपने सिर पर अनुभव करेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org